I.

Lecture Series No:-76

Online Class, Date-14/7/2020, Day-Tuesday, Time-10:50 - 11:40 A.M.

Topic,

(1.) Duty and obligation

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy.
B.A Part-II
Paper-(5.)
A.N.D. College Shahpur Patory, Samastipur,

Ans:-) कर्तव्य और दायित्व सापेक्ष है। कर्तव्य के साथ ही दायित्व लगा रहता है। कर्तव्य मनुष्य के विवेक और वासनाओं के द्वन्द्व का संकेत करता है। यदि यह द्वन्द्व नहीं होता और जैसा चाहिए वैसा ही कर्म मनुष्य करता है तो फिर कर्तव्य की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती है।

विवेक और वासना द्वन्द्व होने के कारण ही ये दोनों व्यक्ति को अपनी ओर खींचते है। इनमें वह, जो नैतिक नियम के अनुसार है, उचित है। और ऐसे ही कर्मों की बाध्यता

P.T.O

(2.)

व्यक्ति महसूस करता है। वही उसका कर्तव्य है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि वैसे कर्म जिनका सम्बन्ध नैतिक आदर्श से है, वे उसके कर्तव्य हैं।

और वह उन्हें करने के लिए बाध्य होता है। अतः जो नैतिक दृष्टिकोण से उचित है, वही कर्तव्य है।

यह नैतिक बाध्यता क्यों और कैसे है, इसके संबन्ध में कई मत हैं। कर्तव्य को एक प्रकार का नैतिक ऋण माना जाता है, जिसे चुकाना मनुष्य का फर्ज है।

कुछ विचारक कर्तव्य के दायित्व को बाह्य मानते हैं। अर्थात् किसी बाह्य शक्ति के दबाव से ही उचित कर्मों की प्रेरणा मिलती है, पर यह मत दोषपूर्ण है।

END.